RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 26 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 4 दिसम्बर 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

३१ दिसम्बर २०१३ को स्वर्ण मन्दिर, अमृतसर में दिगड़ी ग्रुप

'दिगड़ी' में ही हो सकता था 'सुरेन्द्र'

नवराज सिंह पांगती

दिल्ली। मेरे पास शब्द नहीं है।, मेरे/हमारे इस दिगड़ी के लिए, जो अक्सर गुनगुनाते थे-'आज जाने की जिद न करो, यूं ही पहलू में बैठे रहो' और आज हम सब को छोड़ कर चला गया.....

विगत चार दशकों से भी ज्यादा का साथ था, हमारे सारे सुख-दु:ख साथ रहे। विचारों की समानता ओर समाज के लिये कुछ करने की हार्दिक इच्छाओं से 'दिगड़ी' बने। मुम्बई, दिल्ली, बंगलौर, चण्डीगढ़, लखनऊ जहाँ भी सुरेन्द्र की पोस्टिंग रही, हमें अवश्य बुलाते और हम सब परिवार की तरह साथ रहते।

विगत कई नव वर्षों की संध्या हम दिगड़ी सपरिवार मनाते रहे हैं। अब विडम्बना देखा, इस वर्ष नव वप्र शिलोंग में मनाने के लिये सुरेन्द्र ने ही पूरी व्यवस्था की थी परन्तु किसे पता था विधाता ने कुछ और ही रचा था।

'सुरेन्द्र' में जिस तरह की लहर थी वह किसी साधक में ही हो सकती है, यही कारण है कि उसका मन और सारे दिगड़ी साथियों का मन एक ही सोच रखता है, अपने समाज को आगे बढ़ाना और आगे बढ़ चुके साथियों को उनके समाज की जड़ों से जुड़े रहने का आह्वान करना। दिगड़ी में ही हो सकता था 'सुरेन्द्र'। सुरेन्द्र का मतलब समय व्यतीत करना भर नहीं था बल्कि जब तक जीवन है उसे सकारात्मक ऊर्जा के साथ अपनी जड़ों को मजबूत करना था। यही कारण है कि हम कुछ साथियों ने विचार उपरान्त दिगड़ी ग्रुप बनाया और कभी भी यह नहीं सोचा कि कौन साथी क्या निर्णय लेगा। क्योंकि सबको पता है जो भी साथी जो कुछ कहेगा वह समाज हित में और परोपकार के लिये ही है। बस फिर क्या था, कई प्रकार के प्रस्ताव बने और उनपर सफल कार्य हुआ। यह ग्रुप हम साथियों के लगाव के साथ ही इन सारे परिवारों के लगाव का कारण बना और इन परिवारों का लगाव एक बड़ा परिवार सा है। इस बड़े परिवार का सदस्य 'सुरेन्द्र' आज हमसे बिछड़ गया। हमने कितने ही सपने संजोए थे और कितने अरमान थे कि रिटायमेंट के बाद सभी दिगड़ी साथी मिलकर उन कार्यों को करेंगे जो हमारे दिलों में हिमालय की तहत पैठ करती हैं। इनका माध्यम युवाओं को प्रोत्साहित करने से लेकर प्रतिभाओं को उत्साहित करने और अपने अनुभवों से दूरस्थ व प्रवासियों तक जोड़ना था। इसके लिये 'पिघलता हिमालय' आरम्भ से ही हमारा दर्पण रहा है।

दिगड़ी के अभियान में कई ऐसे कार्य रहे हैं जिनका विचार भी एकएक नहीं बल्कि लम्बे संघर्ष के बाद ही आ सकता है। दिल्ली सहित तमाम स्थानों पर सीमान्त क्षेत्र के उन लोगों को सम्मानित किया गया जिनसे क्षेत्र का नाम लिया जाता है। इनमें पद्मश्री एवरेस्ट विजेता लवराज सिंह धर्मशक्तू का सम्मान, मुनस्यारी में मिनी मैराथन का आयोजन, सीमान्त के दूरस्थ प्राइमरी स्कूलों में निर्धन व मेधावी विद्यार्थियों को प्रोत्साहन व जरूरतमंदों को सहयोग जैसे कार्य शामिल हैं। दिगड़ी ग्रुप यह सब आगे भी करता रहेगा लेकिन भाई सुरेन्द्र सिंह मर्तोलिया की कमी हमेशा रहेगी।

सुरेन्द्र का असमय चले जाना दिगड़ी परिवार के साथ ही उस समाज के लिये भी अपूरणीय क्षति है जो भरोसे के साथ कई सपने उनमें देख रहा था। ईश्वर हमारे साथी सुरेन्द्र को अपने श्री चरणों में स्थान दें। उनकी मधुर स्मृतियां हमेशा समाज के लिये कुछ करते रहने को प्रेरित करेंगी।

स्मृति शेष
स्व.सुरेन्द्र सिंह मर्तोलिया

कार्यालय प्रतिनिधि

दिल्ली/मुनस्यारी। 23 नवम्बर 2023 की प्रात: जिस प्रकार की सूचना मिली वह बहुत ही दु:खभरी थी, क्योंकि असमय ही सुरेन्द्र सिंह मर्तोलिया हम सबका साथ छोड़ कर चले गये। किसी को विश्वास ही नहीं हो रहा है हमेशा तरोताजा दिखाई देने वाले हमारे 'सुरदा' गोलोकवासी हो गये।

भारत पेट्रोलियम कारपोरेश लि. के शीर्ष अधिकारियों में शामिल श्री सुरेन्द्र सिंह मर्तोलिया 'सुरदा' अपनी सादगी व सच्चाई के लिये जाने जाते थे। 'दिगड़ी ग्रुप' संस्थापक सदस्य के रूप में वह सामाजिक कार्यों में रत रहे। अपने पिता स्व. उम्मेद सिंह व चाचा स्व. दुर्गा सिंह, श्री मंगल सिंह की परम्परा को साधते हुए 'मर्तोलिया लॉज' की रीड़ के रूप में जाने जाते थे। 2 जुलाई 1965 को जन्मे सुरेन्द्र सिंह संयुक्त परिवार का सबसे बड़े बालक के रूप में होने के कारण उनका लालन पालन बहुत ही वैभवपूर्ण हुआ। बचपन से ही मेधा भरे सुरेन्द्र की शिक्षा-दीक्षा बेहतरीन विद्यालयों में हुई। सैनिक स्कूल घोड़ाखाल के मेधावी सुरेन्द्र ने लखनऊ विश्वविद्यालय से अपनी पढ़ाई पूर्ण की।

अपने पठन-पाठन के लिये भले ही सुरेन्द्र सिंह को बाहर रहना पड़ा लेकिन वह अपनी पारवारिक व पारम्परिक परम्परा की जड़ों से जुड़े रहे। माता और चाचियों का लाड़ प्यार एक ओर और पिता उम्मेद सिंह का अनुशासन एक ओर था। ऐसे में चाचा दुर्गा सिंह मर्तोलिया का फक्कड़पन और छोटे चाचा मंगल सिंह मर्तोलिया का 'भरत स्वरूप' उन्होंने देखा। छोटे भाई दिनेश सहित भाई-बहिनों के बीच वह ज्येष्ठ के रूप में थे और उनका स्वभाव भी इसी अनुरूप बनता चला गया। संयुक्त परिवार की मान्यताओं के साथ वह जुड़ते हुए घर और समाज के बीच अपनी प्रतिभा से चमके। चाचा स्व. दुर्गा सिंह मर्तोलिया और स्व. आनन्द बल्लभ उप्रेती द्वारा 'पिघलता हिमालय' की शुरुआत करने पर यह नया प्रयोग भी उन्होंने

शेष पृष्ठ 2 पर

जीवन साया

हँसती खिल-खिलाती जिन्दगी में, ईश्वर की रहती इबादत।
नहीं मालूम जिन्दगी की अगले पल में, क्या होगी हसरत।
ईश्वर की क्या चाहत रही होगी, दिगड़ी परिवार हुई आहत।
अनमोल रिश्ता छीन लिया, शायद ईश्वर को होगी जरुरत।
सोचा न था बीच राह हमें छोड़के, उस दुनियाँ को चल दोगे।
जिस दुनियाँ से आकर जोड़े रिश्तों को, पल में भुला दोगे।
कई अरमान संजोये थे, एहसास नहीं होता ऐसे छोड़ दोगे।
सदा मुस्कान बिखेरते चेहरे को, तुम पर्दा करके चल दोगे।
तुम्हें एहसास नहीं होगा, तुम्हारे बगैर कितनी उदासी होगी।
चाहने वालों की जीवन में, अमावस की रात महसूस होगी।
आबाद होते बागों में, तुम जैसे बागवान की कमी खलेगी।
जिनके आशीष भरी हाथों से, लोगों की कल्याण होती होगी।
जीवन की खुशियाँ ऐसी खत्म हुई, सबको रुलाते छोड़ गये।
बिछुड़ गये हो कुछ इस अंदाज से,जग में वीरानी कर गये।
समाज में तुम समाहित रहे,इस लिए दिलों में उतर गये।
तुम्हारी अच्छाइयों की परछाई, सबको सीख सिखा गये।
शरीर नाश्वर और प्रेम अमर,जनम-मरण अन्तिम सत्य है।
देख जाते सब ओझल होते, जो दिल के बहुत करीब रहते है।
दु:ख सम्वेदना से वो लौटते नहीं, ईश्वर प्रार्थना एक साधन है।
ईश्वर चरणों में स्थान मिले,दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि है।

-**पुष्कर सिंह पंचपाल**, दिल्ली

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

सिलक्यारा के सबक

यमुनोत्री हाईवे के निकट छोटे से गाँव सिलक्यारा को आज दुनिया ने पहचान लिया है क्योंकि यहाँ सुरंग में फंसे श्रमिकों को एक पखवाड़े तक जिस प्रकार मौत के मुंह में रहकर निकलना पड़ा वह दुनियाभर के मीडिया के माध्यम से देखा-सुना। सिलक्यारा में सुरंग हादसे के दौरान अधिकांश को पता चला कि निर्माणाधीन यह सुरंग उत्तराखण्ड की सबसे लम्बी सुरंग है। यह चार धाम महामार्ग परियोजना ४.५ किमी है, इसे २०२४ तक पूरा होना था लेकिन हादसे के कारण अब इसका निर्माण कार्य प्रभावित हुआ है। सिलक्यारा के सबक तो हैं ही.....

स्मृति शेष : सुरेन्द्र..... प्रथम पृष्ठ का शेष

देखा और युवा साथियों के बीच प्रचारित किया। पठन-पाठन के बाद नौकरी-पेशा कारणों से फिर उन्हें बाहर का रुख करना पड़ा लेकिन 'दिगड़ी' ग्रुप के रूप में अपने साथियों के साथ उन्होंने जिस प्रकार से प्रयोग किये वह सराहनीय हैं।

उन्हें कभी भी पद-प्रतिष्ठा का गुमान नहीं रहा क्योंकि उनकी परवरिश इस प्रकार से हुई थी कि वह बाहर की दुनिया देखने के साथ ही हिमालयी संस्कृति को बराबर जी रहे थे। मुनस्यारी के आयोजन हों या जोहार के कहीं भी बाहर होने वाले कार्यक्रमों में वह यथासम्भव भागीदारी करते और पिछली बार तो दिगड़ी का संकल्प ही था कि 'स्व. दुर्गा सिंह मर्तोलिया' पर केन्द्रित पुस्तक को तैयार किया जायेगा। नौकरी कारण से कई स्थानों पर रहने के बाद वह मुम्मई के बाद अब दिल्ली आ चुके थे। 2025 में सेवानिवृत्त होने के बाद कई कार्यों की योजना उनके मन में थी लेकिन उनके जाने से बहुत कुछ अधूरा रह गया।

वह अपने पीछे पत्नी श्रीमती पुष्पा मर्तोलिया, पुत्र गौरव, पुत्री प्रगति, भाई-बहिनों सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं। स्व. मर्तोलिया के निधन पर हिमनगरी मुनस्यारी सहित जगह-जगह शोकसभा कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। पिघलता हिमालय परिवार अपने साथी के निधन से बहुत दु:खी है और उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

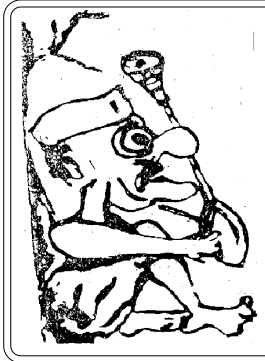

फसक

दाज्यू, मारपीट-लूटपाट आम बात हो गई ठैरी

उत्पीड़न के खिलाफ तैयारी तो करनी ही पड़ती है बल

दाज्यू, दिल्ली से नैनीताल घूमने पहुँची महिला पर्यटक को चालक ने फतोड़ दिया बल। चालक का कहना है- किराया देने पर आनाकानी हो रही थी। दाज्यू, इससे पहले भी सरोवर नगरी में लात घूसे की घटनाएं होती रही हैं। पुलिस ने बहा है कि पर्यटकों के साथ अभद्रता पर कार्रवाई होगी। दाज्यू, कहना-सुनना होता रहेगा। मारपीट-लूटपाट आम बात हो गई ठैरी। कार पर लस्सी गिरने को लेकर हुए झगड़े में दोस्त ने साथी कत्ल कर दिया। बड़ा बेसुध जमाना आ गया है। तभी कह रहे हैं कि होशियार-समझदार। दाज्यू, उत्पीड़न के खिलाफ तैयारी तो करनी ही पड़ती है बल।

राजकीय शिक्षक संघ का शैक्षिक सत्याग्रह आन्दोलन चल रहा है। अपनी 35 सूत्रीय मांग को लेकर आन्दोलन कर रहे शिक्षकों ने कहा है कि यदि उत्पीड़न हुआ तो एक भी शिक्षक वेतन नहीं लेगा। उधर वाहन फिटनेस का काम निजी हाथों पर देने का विरोध शुरु हो चुका है। हल्द्वानी में गौला संघर्ष समिति और टैक्सी यूनियन ने केन्द्रीय परिवहन मंत्री का पुतला फूंक डाला।

दाज्यू, सीएम सैप कह रहे हैं- 'उत्तराखण्ड में डेढ़ लाख करोड़ का निवेश होगा।' हमें समझ नहीं आ रहा है कि गाँव के भूमिया मन्दिर का क्या होगा, सारा हल्ला तो अयोध्या राममन्दिर के लिये हो रहा है। सरकार ने जैसे ही कार्रवाई की बात की आबकारी वालों ने नकली शराब बनाने वाली फैक्ट्री पकड़ी। दाज्यू, नकली शराब बनाने वाले केरोमल से रंग और इसेंस से खुशबू मिलाकर काम चला रहे थे बल। पीने वालों को क्या चाहिये, जो हाथ लगा.....सपोड़ा सपोड़, धपोड़ाधपोड़। ये रही शराब वाली बात। पता नहीं किस-किस में मिलावट नहीं है। रंगीन पेय पदार्थ, कम्पनी के डिब्बा बन्द गन्द-बन्द, होटल के फत्याये हुए लिज्जत पैकेट.....। हर जगह उत्पीड़न करने और करवाने वाले तैयार हैं। इज्जत का फलूदा.....

दाज्यू, हमें बहुत खुशी हो रही है उत्तराखण्ड कैडर के भारतीय प्रशासनिक सेवा के चार अधिकारियों को पुरानी पेंशन का लाभ मिलने वाला है। साब लोगों को लाभ मिलना ही चाहिये। बांकी कौन पूछने वाला है। दुनिया चलती रहेगी.....। यह भी खुशी हो रही है कि हमारा उत्तराखण्ड फिल्म शूटिंग के लिए नया डेस्टिनेशन कन रहा है बल। दाज्यू, और चाहिये भी क्या? यही सब होता रहे। साब लोग खुश रहें और हमसब फिल्म देखें। बांकी आपदा लगी ठैरी...

-तुम्हारा भुली झकरुवा

आपके मौन के पीछे बहुत सपने थे 'सुरदा'

डॉ.पंकज उप्रेती

'सुरदा' आपका अचानक चले जाना हम सबके लिये बड़ी शून्यता है। आपके मौन के पीछे बहुत सपने थे। घर के बड़े होने कारण भी और दूरदृष्टि के चलते आप भले ही शान्तप्रिय थे लेकिन आपके मचलते मन को कई बार मैंने देखा। मुझे याद है बचपन में भी जब गुड्डू दा (डॉ. दिनेश सिंह मर्तोलिया) और उषा दी (डॉ. उषा जंगपांगी) मेडिकल कालेज लखनऊ में पढ़ाई के लिये जाते थे, पिघलता हिमालय के कार्यालय 'शक्ति प्रेस' में आपका यदा-कदा आना बहुत सौम्य था। आप सभी सबकी धुरी थे जिसे आपने सिद्ध भी किया। समय बीतता गया। दुनिया-जहान के कड़वे सचों को आपने जाना और अपने मृदों व्यवहार से सबको साधा।

पिता स्व. उम्मेद सिंह जी के साथ पिता-पुत्र का रिश्ता होने के बाद भी गम्भीर विषयों पर चर्चा और चाचा स्व. दुर्गा सिंह जी के साथ दोस्ताना गपशप भी शामिल थी। मुझे याद है जब हमारे गुड्डू दा (डॉ. दिनेश मर्तोलिया) की बारात अल्मोड़ा आई तो मैं और भाई धीरज हल्द्वानी से बारात में शामिल होने जा रहे थे, सुरदा की आँखें हमें दूर से ही टटोल रही थी। उन्होंने आते ही सबसे मिलाते हुए बारात के बीच काफी बातें कीं। वह कहने से ज्यादा करने पर विश्वास करते थे। यही कारण है कि 'दिगड़ी ग्रुप' भी ऐसे ही साथियों का जोड़ा बन गया। इस ग्रुप की गतिविधियों ने समाज को बहुत कुछ दिया है।

सुरदा समय मिलते ही मुनस्यारी घर आते और शिष्टाचार भेंटघाट के बाद अपने आप में मौन हो जाते लेकिन यह मौन मृदुपन लिये था। भाई मनोज के विवाह के समय भी सजी महफिल में उनकी मृदु मुस्कान याद है। सारे मित्रों के बीच

दिगरी के क्लीन-ग्रीन मुनस्यारी अभियान में सुरेन्द्र सिंह मर्तोलिया और नरराज सिंह पांगती

महफिल में जब गुड्डू दा नाचने लगे, सुरदा दूर तलक व्यवस्थाओं पर नजर रखे हुए थे। यादों के इस मेले में कई किस्से हैं। दिगड़ी साथियों द्वारा जोहार क्लब के खेलोत्सव में करवाई गई मैराथन दौड़ के समय सुरदा ने 'पिघलता हिमालय' की कई पुस्तकों को मुझसे लेते हुए कहा- 'तुम्हारी भाभी (श्रीमती पुष्पा मतोलिया) को पढ़ने का बहुत शौक है' और अपने घर का नया पता भी दिया। पिघलता हिमालय की ई-पेपर स्वरूप को देखकर भी वह खुश हुए और बोले- 'यह प्रयास भी अब हमारे बच्चों को बांध सकेगा। अपने घर-गाँव से जोड़े रखेगा।' दूर रहकर भी वह पूरी तरह अपने पहाड़ को जी रहे थे और यही संस्कार उन्होंने अगली पीढ़ी को दिये। भाई टी.एस.वृजवाल, धीरेन्द्र वृजवाल के साथ खासा लगाव था हमारे सुरदा का, जब भी उनसे बात होती वह सबके नाम लेकर हालचाल पूछते। सुरेन्द्र सिंह मर्तोलिया अपने कामकाज और दौड़भाग में घिरे होने के कारण कई योजनाओं को आने वाले दिनों के लिये रखे हुए थे। 2025 में सेवानिवृत्त होने के बाद वह सामाजिक कार्यों में पूरी तरह रमना चाहते थे। अभी हाल ही उन्होंने एक दिन ताऊ जी (उम्मेद सिंह जी) की फोटो भेजी। लिखा कुछ नहीं था लेकिन उनकी हथेली में रखी फोटो का 'चित्र' बहुत कुछ कह रहा था। सुरदा से चाचा दुर्गा सिंह मर्तोलिया (पिघलता हिमालय संस्थापक) पर बनने वाली पुस्तक को लेकर भी बातें हुईं और तय हुआ कि वह पुराने फोटो सहित अपनी स्मृतियों को दर्ज करेंगे। इस बार हल्द्वानी में हुए जोहार महोत्सव के समय भी वह पधारे लेकिन किसे पता था कि यह उनकी अन्तिम मुलाकात होगी।

अचानक स्वास्थ्य कारणों से उन्हें दिल्ली में अस्पताल में भर्ती करवाया गया। जहाँ हृदयघात के कारण उन्होंने दम तोड़ दिया। भाई डॉ. दिनेश उनके साथ थे। इस समय मैं मुनस्यारी था, जहाँ ग्वालदम से मंजू दीदी (मंजू पांगती) का तड़के फोन आया जो विश्वास लायक था नहीं लेकिन ईश्वरीय सत्ता के समक्ष सच स्वीकारना होता है। शीघ्र ही मैंने उषा दी (डॉ.उषा जंगपांगी) से मोबाइल पर बात की, उन्होंने भी इस दु:खभरी सूचना की जानकारी दी।

'सुरदा' आप अपने मौन के साथ चले गये हो लेकिन हम सब तुम्हें हमेशा याद करेंगे। जिन सपनों साथ तुम्हारा विश्वास था उन्हें बनाएंगे। आप घर के बड़े होने के अलावा सबके आर्दश भी थे। मंगल चाचा बीमारी में घिरे होने के बाद भी इस घटना से बहुत गम में हैं। घर-परिवार के साथ आपके सभी साथी और चाहने वाले विश्वास करें भी तो कैसे क्योंकि आपका मृदु मौन हमेशा उम्मीद बनकर रहेगा। ईश्वर आपको अपने चरणों में स्थान दे। नमन।

बैस्ट टीचर शान्ति पाण्डे नहीं रही

हल्द्वानी। बैस्ट टीचर अवार्ड से पुरस्कृत एवं शान्ति कुंज परिवार के साथ समर्पित भाव से जुडी 76 वर्षीय शान्ति पाण्डे शुक्रवार 24 नवम्बर 23 को पंचतत्व में विलीन हो गई।

यहाँ रानीबाग स्थित चित्रशिला घाट में उनके पुत्र दीप चन्द्र पाण्डे ने उन्हें मुखाग्नि दी ।

मूल रुप से जनपद अल्मोडा के ग्राम सूपाकोट निवासी स्वर्गीय भुवन चन्द्र पाण्डे की पत्नी शान्ति पाण्डे 2007 में तेलंगना राज्य के जनपद आदिलाबाद में सिरपुरकागजनगर स्थित बाल विद्यामन्दिर हाईस्कूल से रिटायर हुई। रिटायरमेन्ट से पूर्व अविभाजित आन्ध्रप्रदेश में उन्हें बैस्ट टीचर का अवार्ड मिला था। इस बीच लीवर की खराबी और निमोनिया की चपेट में आने से निजी अस्पताल के आई.सी.यू में थी लेकिन कोई सुधार नही होने के कारण उनके परिजन बृहस्पतिवार को घर ले आये।

हल्द्वानी में जे.के.पुरम बी-54 स्थित अपने आवास में उन्होंने अन्तिम सांस ली। विभिन्न संगठनों एवं प्रबुद्धजनों ने उनके निधन पर गहरा दु:ख व्यक्त किया है। उनकी शवयात्रा में उत्तराखण्ड कार्मिक एकता मंच के संस्थापक अध्यक्ष रमेश चन्द्र पाण्डे, एन.सी तिवारी, ज्ञान चन्द्र त्रिपाठी, उमेश चन्द्र उप्रेती, ओम प्रकाश त्रिपाठी, उमेश चन्द्र पाण्डे, हरीश चन्द्र पाण्डे, हेम चन्द्र पाण्डे, नवीन खर्कवाल, उमेश जोशी, प्रदीप पाण्डे, जुगल किशोर, धीरेन्द्र पाण्डे , देवेश शर्मा, अनिल त्रिपाठी, ललित पन्त आदि थे ।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सिलक्यारा, उत्तरकाशी

त्रिभुवन सिंह पांगती
ADG(Retd.) Geological survey of India.

टनल हादसे के कारण

(1)भूगर्भीयता के अत्यधिक विवर्तनिक क्षेत्र (highly tectonic region of himalaya) में किसी भी सतत विकास में भूविज्ञान एक प्रमुख और महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हिमालयी भू-भाग में किसी भी परियोजना के शुरू होने से पहले हिमालय में लगातार भूस्खलन और विस्तृत भू-भाग की जानकारी की समस्या को गम्भीरता से देखा जाना चाहिए।

(2) मेरी अपनी 37 वर्षों की सेवा के दौरान व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया है, जो कि हिमालयी इलाकों में इंजीनियरिंग भूविज्ञानी के रूप में काम करने से प्राप्त किया है।

(3) यह वास्तव में दुर्भाग्यपूर्ण है कि निजी कम्पनियां कई अन्य क्षेत्रों में सूक्ष्म बिजली परियोजनाओं और संचार परियोजनाओं के निर्माण में शामिल हो रही हैं जिन्हें भूवैज्ञानिक और इलाके की भू-भाग की स्थिति से सम्बन्धित जानकारी के अभाव में इस तरह के इलाके में वे सभी परियोजनाएं पूरी तरह से उत्तराखण्ड राज्य में किल हो रही हैं।

(4) हिमालयी भू-भाग में यातायात सुरंगों का प्रावधान सबसे अच्छा विकल्प है।

(5) इन क्षेत्रों की भू-संरचना विभिन्न हैं जोकि स्थान-स्थान पर भिन्न भिन्न हैं। टनल बनाने के लिए विस्तृत भूगर्भीय एंव भू-तकनिकी अध्ययन के अनुसार सुरक्षित डिजायन (support) रोकमास (rock formation) के आधार पर तैयार किए जाते हैं।

(6) इस प्रकार के रोकमास में, मैंन टनल कार्य शुरू करने से पहले, एक पायलट टनल बनाई जाती हें तथा उस टनल रोकमास कंसिन को देखकर सपोंट सिस्टम तैयार किए जाते है एवं कन्ट्रोल बलास्टिगं किए जाने चाहिए परन्तु इन सभी बातो को नजरअंदाज किया गया है।

(7) अत्यधिक मात्रा में ब्लास्टिंग का प्रयोग किया जाना भी एक कारण हैं जिससे सर्म्पूण क्षेत्र में भारी नुकसान हुआ है।

(8) टनल एक्सपर्ट की राय को नजरअंदाज किया जाना भी मुख्य कारण हो सकता हें। सुरक्षा मानको को नजरअंदाज किया जाना।

(9) उत्तराखंड राज्य में सभी राष्ट्रीय राजमार्गों की स्थिति, जो निर्माणाधीन और पूर्ण होने के चरण में हैं, सभी मौसमों में लगातार गम्भीर भूस्खलन की समस्याओं का सामना कर रहे हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि कटी हुई ढलानों को स्थल की भूगर्भीय परिस्थितियों के अनुसार संरक्षित नहीं किया जा रहा है और उचित निवारक उपायों का पालन नहीं किया जा रहा है। यहाँ तक कि कई पुलों को भी जमीनी भूगर्भीय स्थितियों के बारे में कम जानकारी के कारण ध्वस्त हो रहे हैं।

(10) इस प्रकार के कार्य के लिए सरकार एक्सपर्ट जिनको भू-तकनीकी तथा जियोलॉजी का अनुभव है उनकी राय तक नहीं ली जारही है जिसके कारण इस प्रकार की घटनाएं हो रहीं है ।

(11)भूगर्भीय जियोहैजड एवं ग्लेशियो-लोजिकल एवं भू-भाग का विस्तृत अध्ययन किया जाना चाहिए। यह किसी भी तकनीकी विशेषज्ञता रखने वाली सरकारी डिपार्टमेंट या अन्य तकनीकी एजेंसियों जिन्हें हिमालयन क्षेत्रों में कार्य करने का विशेषज्ञता प्राप्त हो, कराया जाना अतिआवश्यक है। इसको किसी भी हिमालयन क्षेत्र की सतत विकास के लिए, किसी भी कीमत पर नज़रअंदाज नहीं किया जाए।

(12) Also a high level committee of eminent experts also needs to be set up immediately to provide all technical review & advices for all infrastructure & communication projects particularly, in this region,for the sustainable developments in the area.

इस हादसे के लिए जिम्मेदार कौन?

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

जिस दिन पूरा देश रोशनी में सराबोर था उस दिन इन मजदूरों के घर अन्धेरा छा गया जब इनके परिजनों को पता चला कि इनके अपने सिल्क्यारा टनल में फंस गए हैं। आखिर ये हादसा क्यों हुआ? क्या इस हादसे को रोका जा सकता था और इस घटना के पीछे जिम्मेदार कौन है इसी के बारे में बताएंगे दिन था रविवार। तारीख थी 12नवम्बर। सुबह के 5.30 बजे थे। जब उत्तरकाशी में सिलक्यारा से बड़कोट के बीच बन रही निर्माणाधीन सुरंग धंस गई। यह घटना सुरंग के सिलक्यारा वाले हिस्से में 60 मीटर की दूरी में मलबा गिरने के वजह से हुई। जिसमे 41मजदूर फंस गए। दरअसल इस टनल को बनाने का मकसद यमुनोत्रीधाम की दूरी कम करना था। अब इससे दो सवाल उठते हैं की पहला ये आपदा आई कैसे? और दूसरा किसकी लापरवाही के वजह से इतना बड़ा हादसा हुआ?

कुछ विशेषज्ञ चार धाम बारहमासी राजमार्गों को बनाने, खासकर सड़कों के चौड़ीकरण के लिए अपनाए जा रहे तरीकों को इसका जिम्मेदार मान रहे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि ये सभी मौसम के अनुकूल सड़कें उत्तराखण्ड के लिए एक डिजास्टर हैं, खासकर उनके चौड़ीकरण के लिए इस्तेमाल की जा रही गलत तकनीकें, यदि आप ढलानों को परेशान करते हैं, तो भूस्खलन जैसी आपदाएँ अपरिहार्य हैं। आपदा आने को लेकर प्रख्यात पर्यावरणविद् रवि चोपड़ा के मुताबिक कि यदि पारिस्थितिक चिन्ताओं पर ध्यान नहीं दिया गया तो उत्तरकाशी के सिल्क्यारा में जो घटना हुई है वैसी घटनाएं होती रहेंगी। रिपोर्ट्स के अनुसार, उत्तराखण्ड का जब गठन हुआ था उसके बाद पहले दशक में प्राकृतिक आपदाओं की संख्या बहुत कम थी। वहीं 2010के बाद प्राकृतिक आपदाओं की संख्या में काफी तेजी से वृद्धि हुई है। इस साल की शुरुआत में, जोशीमठ में भी भूमि धंसने का एक मामला सामने आया था, जहाँ वहीं के कुछ निवासियों ने समस्या के लिए एनटीपीसी की 520 मेगावाट की तपोवन-विष्णुगाड़ जलविद्युत परियोजना को जिम्मेदार ठहराया था। सिलक्यारा में 853.79 करोड़ रुपये की लागत से बन रही 4.5किमी लम्बी सुरंग में गम्भीर सुरक्षा खामी सामने आई है। डीपीआर में एस्केप टनल द्धनिकास सुरंगऋ का प्रविधान होने के बावजूद निर्माण कंपनी नवयुग इंजीनियरिंग ने यह सुरंग बनाई ही नहीं। यही कारण है कि सुरंग में फंसे 41श्रमिकों का जिन्दगी खतरे में है। यहाँ आम आदमी की जिन्दगी की कीमत नमक के कीमत से भी कम है तो क्यों कोई उनकी सुरक्षा की परवाह करेगा। नियम के अनुसार तीन किलोमीटर या इससे अधिक लम्बी सुरंग के साथ अनिवार्य रूप से निकलने का सुरंग बनाई जानी चाहिए, लेकिन यहाँ नियमों को हवा में उड़ा दिया गया। हैरानी की बात ये है कि कागजों में बाकायदा निकलने का सुरंग का डिजाइन तैयार किया गया है। यह डिजाइन बीते 16 नवम्बर को घटनास्थल पर पहुँचे सड़क परिवहन एवं राजमार्ग राज्यमंत्री जनरल (सेनि) भी देख चुके हैं। इस सुरंग में भी अगर इमरजेंसी एक्जिट की व्यवस्था होती तो फंसे हुए श्रमिक आसानी से बाहर आ सकते थे। इसके साथ ही टनल में आपातकाल में बचाव के लिए ह्यूम पाइप क्यों नहीं था यह कम्पनी की कार्यशैली पर सवालिया निशान लगाता है। यह सीधे तौर पर निर्माण करा रही कम्पनी की लापरवाही को बताता है। लेकिन, यह लापरवाही तब अपराध बन जाती है जब यह पता चलता है कि पाइप तो था मगर उसे कुछ समय पहले ही निकाल लिया गया था। दरअसल, सुरंग निर्माण की शुरुआत में ही आपातकाल में बचाव के लिए ह्यूम पाइप बिछाया जाता है। जहाँ तक टनल की खोदाई हो जाती है वहाँ तक इस पाइप को बढ़ाया जाता है। इस ह्यूम पाइप को तीन साल पहले सुरंग के सम्वेदनशील क्षेत्र में बिछाए गए थे, जिन्हें एक महीने पहले अचानक हटा दिया गया। ऐसा क्यों किया गया, इसका निर्माण कम्पनी के अधिकारियों के पास कोई जवाब नहीं है। फिर शुक्रवार को डंजर जोन सामने आने के बाद सम्वेदनशील क्षेत्र में 15 ह्यूम पाइप बिछाए गए, ताकि सुरंग में फंसे श्रमिकों से बातचीत बनाए रखने के साथ उन तक भोजन, आक्सीजन व दवाएं पहुंचाने वाले पानी निकासी के पाइप तक रेस्क्यू टीम सुरक्षित आवाजाही कर सके।

बहरहाल, इस हादसे से उत्तराखण्ड सरकार क्या सबक लेती है और क्या बदलाव करती है जिससे आगे ये हादसा न हो ये देखने वाली बात होगी। राष्ट्रीय आपदा मोचन बल, राज्य आपदा प्रतिवादन बल, भारत तिब्बत सीमा पुलिस, सीमा सड़क संगठन के 160 बचाव कर्मियों का दल दिन रात बचाव कार्यों में जुटा रहा। फंसे श्रमिकों की सलामती के लिए एक स्थानीय पुजारी ने मौके पर पूजा भी सम्पन्न कराई। गंगोत्री मन्दिर के कपाट बंद होने के अवसर पर श्रमिकों के सकुशलबाहर आने के लिए प्रार्थना भी की गयी । आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि सुरंग के अन्दर जाकर अधिकारी पाइप के जरिए मजदूरों से बात कर उनका हौसला बढ़ाया। प्रशासन एवं पुलिस के अधिकारी मजदूरों के परिजनों को बचाव प्रयासों की जानकारी देते हुए उनकी श्रमिकों से बात कराई। उत्तरकाशी के मुख्य चिकित्सा अधिकारी आरसीएस पंवार ने बताया कि सुरंग के पास एक बिस्तरों का अस्थाई चिकित्सालय, एंबुलेंस के साथ मेडिकल टीमें भी तैनात कर दीं।

सबने देखा भी सीएम लगातार जायजा ले रहे हैं और पीएम भी बातचीज कर रहे हैं। इस पूरे अभियान में बराबर दिक्कत आती रही, 41 लोगों की जान टनल के भीतर फंसी और बाहर परिजन समेत सभी प्रार्थना करते रहे। घटना देख बिफरने वाले बहुत हैं। ऐसा कभी न हो.

ज्योतिष की बातें - 155

इस सप्ताह चंद्रमा के अतिरिक्त अन्य किसी भी ग्रह का गोचर परिवर्तन नहीं हो रहा है । चंद्रमा क्रमशः सिंह, कन्या, तुला व वृश्चिक राशि में गोचररत रहेगा ।

29 नवम्बर 2023 को स्पष्टमान से केतु राशि परिवर्तित कर कन्याराशि में प्रवेश कर चुका है । केतु जिस भाव में रहता है उस भाव के फलों में उतार चढ़ाव करता है। केतु तीसरे, छठवें और ग्यारहवें स्थान पर शुभ फल प्रदान करता है । केतु जिस ग्रह के साथ युति करेगा उसके फलों को भी न्यूनाधिक रूप से प्रभावित करता है। कर्क, मेष व वृश्चिक राशि के जातकों को केतु अगले डेढ़ वर्ष तक अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा। राश्यनुसार अति संक्षेप में केतु का गोचर फल निम्न में रहेगा। मेष- शत्रु विजय, वृषभ- संतान कष्ट, मिथुन- पारिवारिक कष्ट, कर्क- साहस वृद्धि, सिंह- आर्थिक उतार चढ़ाव, कन्या स्वास्थ्य कष्ट, तुला- देशाटन, वृश्चिक- सफलता, धनु- संघर्ष के बाद सफलता, मकर- आध्यात्मिक प्रवृत्ति, कुम्भ- यात्रा में कष्ट, मीन- दाम्पत्य जीवन में उलझन ।

श्री कालभैरवाष्टमी (भैरव जयन्ती)- मार्गशीर्ष ख्रष्ण पक्ष अष्टमी तिथि को भैरव जयन्ती मनाई जाती है। अष्टमी मध्यान्ह से लेकर प्रदोष तक व्याप्त होनी चाहिए। फिर भी संशय की स्थिति में प्रदोषकाल की प्रधानता होती है। तदनुसार मंगलवार 5 दिसम्बर 2023 को भैरव जयन्ती मनाई जाएगी। जिनकी जन्मकुण्डली में केतु अशुभ है अथवा केतु की महादशा चल रही है उसे श्री कालभैरवाष्टकम् का नित्य पाठ करना चाहिए ।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 46

उधार की सम्पन्नता

मेरे एक मित्र है- लोभदत्त। नौकरी लगते ही सबसे पहले उन्होंने सबसे महंगा टीवी एक लाख रुपए का खरीदा किस्तों पर। इसके बाद फ्रिज सबसे महंगा, वाशिंग मशीन फुल्ली आटोमेटिक, सोफा सेट बहुत महंगा, डाइनिंग टेबल आलीशान, आदि आदि। सभी घरेलू सामान सबसे अच्छी क्वालिटी के, किस्तों पर उधार लेते चले गये। बच्चों को पढ़ाते हैं, शहर की सबसे महंगे स्कूल में। मकान भी किराये पर लिया काफी बड़ा, महंगे एरिया में अत्यधिक किराए पर। एक साल ही बीता नौकरी का कि उन्होंने महंगी कार पन्द्रह लाख रुपए की किस्तों पर खरीद ली। चार-पाँच साल बाद उन्होंने आलीशान मकान खरीदा लगभग एक करोड़ का, बैंक से कर्ज लेकर। आज भाई लोभदत्त जी अपने भाई बन्धुओं में, मोहल्ले वालों में, रिश्तेदारों में, समाज में बहुत ही प्रतिष्ठित माने जाते हैं क्योंकि उनके पास सब कुछ है- गाड़ी, मकान, अच्छा परिवार। लेकिन सच्चाई है कि उनके ऊपर बैंक का, मित्रों का, बाजार का इतना अधिक कर्ज है कि उसको निपटाना तो दूर, उसका ब्याज देना ही मुश्किल पड़ रहा है । 70-80 प्रतिशत वेतन केवल ब्याज देने में चला जाता है। अब तो स्थिति ये हो गई है कि केवल ब्याज देने के लिए ही बाजार से कर्ज लेना पड़ रहा है। उनके पास सम्पन्नता का प्रतीक अपना कुछ भी नहीं है। मकान के कागजात बैंक के पास, गाड़ी की कागजात बैंक के पास, अन्य मंहगे सामानों के कागजात दुकानदारों के पास। सब सामान बेच देने के बाद भी कर्ज नहीं निपट रहा है। अब लोभदत्त के पास दो ही रास्ते बचे हैं या तो लापता हो जाए अथवा आत्महत्या कर ले।

आज लोभदत्त जैसी स्थिति ही समाज के सभी सम्पन्न लोगों की है। यहाँ तक कि देश के सभी राज्य भयंकर कर्ज में डूबे हुए हैं उनके पास अत्यधिक टैक्स लगाकर भी कर्मचारियों को वेतन देने तक के पैसे नहीं है। सभी राज्य ही नहीं बल्कि अपना देश भी विभिन्न प्रकार के आन्तरिक और बाहरी लाखों करोड़ रुपए के कर्ज में डूबा हुआ है। इस समय समाज में या देश में जो भी विकास अर्थात् सम्पन्नता दिखाई पड़ रही है वह वास्तव में उधार की है। इसका परिणाम महा भयंकर होने वाला है । इसका मुख्य कारण है फ्री फंड की स्कीमें में और अंधाधुंध विकास।

-सरल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

शटल सेवा से गर्जिया मंदिर दर्शन

रामनगर। भू कटाव होन से प्रसिद्ध गर्जिया मन्दिर के टीले के ऊपरी हिस्से पर झुकाव दिखाई दे रहा है, ऐसे में श्रद्धालुओं के लिये शटल सेवा जारी हुई। कार्तिक पूर्णिमा पर डोला मन्दिर की सीड़ियों पर रख कर दर्शन करवाए गये। बताया गया है कि अभी ट्रैक्टर ट्राली और ओवरलोड वाहनों को भी रोका जायेगा।

छोटा कैलाश में शिव-पार्वती मूर्ति

भीमताल। क्षेत्र में स्थित छोटा कैलाश में भगवान शिव और पार्वती की मूर्ति स्थापित की जायेगी। ब्लाक प्रमुख डॉ.हरीश बिष्ट ने मन्दिर से जुड़ी दो समितियों के बीच समझौता कराते हुए कहा कि मन्दिर के नाम पर राजनीति न हो। बताते चलें कि मूर्ति लगाने और न लगाने पर दोनों समिति आमने-सामने थीं। तय हुआ है कि मन्दिर में कक्ष निर्माण के साथ ही मार्ग सुधारीकरण का कार्य भी होगा।

बागेश्वर में खनन का खुल्ला खेल

बागेश्वर। इलाके में खनन का खुल्ला खेल चल रहा है। मजेदार तो तब हो गया जब नदी के बीचोंबीच खनन के लिये सड़क बना दी गई। शिकायत पर एसडीएम ने सड़क को ध्वस्त करवाया। अब मामले की जाँच हो रही है। बताया गया है कि कठायतबाड़ा में तस्करी करने वालों ने नदी में भारी मशीन व वाहन जाने के लिये मार्ग बना दिया था।

ट्रांसफार्मर में खराबी से लाखों का नुकसान

अल्मोड़ा। हवालबाग विकास खण्ड के मटेला क्षेत्र में ट्रान्सफार्मर में खराबी आने से लाखों का नुकसान हो गया। ट्रान्सफार्मर खराबी आने से घरों में अचानक हाई बोल्डेज के कारण विद्युत उपकरण फुंक गये। बताया जा रहा है कि 400 से भी अधिक घरों में इसके बाद 22 घण्टे विद्युत भी गुल रही।

तोड़फोड़ के आरोपी दबोचे

सितारगंज। नानकसागर डैम में दो सप्ताह पूर्व मोटर बोट में तोड़फोड़ करने वाले तीन आरोपियों को पुलिस ने दबोच लिया है। बताया जा रहा है कि लेनदेन के विवाद में मोटर वोट संचालक को नुकसान पहुँचाने की नीयत से हथियारबन्द आरोपियों ने हमला किया। मामले में झनकईया से गदरपुर तक पुलिस टीम ने 500 सीसीटीवी कैमरे जाँचे और दो कारों का सुराग मिलने के बाद कार्रवाई आगे बढ़ी।

रेलवे का बुल्डोजर

लालकुआ। रेलवे स्टेशन का चिन्हीकरण के साथ ही बुल्डोजर द्वारा अतिक्रमण हटाए जा रहे हैं। रेलवे अधिकारियों ने पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर बंगाली कालोनी से 5 मकान ढहा दिए। कहा है कि रेलवे अपनी सीमा में किसी भी तरह के अतिक्रमण को बर्दाश्त नहीं करेगा।

जोहार में भालू का आतंक, कार्रवाई की मांग

जोहार घाटी में जंगली जानवर भालू का आतंक बढ़ता जा रहा है। सीमान्त क्षेत्र में भालू द्वारा मकान को क्षति पहुँचाते हुए खाद्यान्न सामग्री व अन्य वस्तुओं को बर्बाद करने की घटनाएं बढ़ने पर मल्ला जोहार विकास समिति ने शासन प्रशासन ने कार्रवाई की मांग की है।

समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह जंगपांगी ने जिलाधिकारी सहित तमाम आला अधिकारियों को सूचना से अवगत कराते हुए जंगली जानवरों से हिफाजत और पीड़ित लोगों को मुआवजा देने की

मांग की है। उन्होंने आयुक्त नैनीताल को अग्रिम कार्रवाई करने हेतु संयुक्त टीम वन विभाग राजस्व विभाग तहसीलदार को मल्ला जोहार के ग्रामों में निरीक्षण करवाने को कहा है। कहा है कि यह घटनाएं दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। इन पर अंकुश लगाने के साथ ही वन विभाग द्वारा गश्त की कार्रवाई भी हो।

मल्ला जोहार विकास समिति ने मुख्यमंत्री सहित अध्यक्ष अनुसूचित जन जाति आयोग देहरादून गणेश मर्तोलिया, अध्यक्ष उत्तराखण्ड अधीनस्थ कर्मचारी उत्तराखण्ड सरकार, भगत सिंह बरफाल पूर्व आईएफएस वन विभाग, मनोहर सिंह पूर्व कमिश्नर असम मेघालय, सुरेन्द्र सिंह पूर्व गढ़वाल कमिश्नर से अपने स्तर से अग्रिम कार्रवाई करने का अनुरोध किया गया है।

बताते चलें कि मल्ला जोहार विकास समिति की वार्षिक बैठक में भी इस बार जंगली जानवरों द्वारा मचाए जा रहे आतंक की घटनाओं को लेकर ग्रामीणों ने शिकायतें की थी। बताया कि भालू द्वारा घर तोड़कर सामग्री नष्ट की जा रही है।

एसएसजे विवि में नियुक्तियों को लेकर गजब हुआ

अल्मोड़ा। सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय जिस प्रकार हड़बड़ में बना दिया गया उससे भी ज्यादा बड़बड़ में इसके परिसरों की घोषणा दिखाई दे रही है। यह इस बात से भी सिद्ध हो जाता है कि एकदम पटरी पर नहीं आ रहे विश्वविद्यालय में नियुक्तियों को लेकर भी गजब हुआ है। इसकी स्थिति क्या होगी यह आने वाले दिनों में स्पष्ट हो सकेगा। अल्मोड़ा में कुमाऊँ विश्वविद्यालय का परिसर था लेकिन इसके पृथक विवि बना दिया गया। लगने लगा कि चलो विद्वत मण्डली के साथ कुछ होने जा रहा है जिस प्रकार की तूफान सा वर्तमान तक मचा हुआ है उससे इस नये विवि को पिछड़ना पड़ा है। इसके पिथौरागढ़ और बागेश्वर परिसर के लिये शिक्षक व कर्मचारियों की कमी को देखते हुए शासन द्वारा राजकीय महाविद्यालयों में कार्यरत कार्मिकों से विकल्प मांगे गये। इनमें जिन कार्मिकों का चयन हुआ उन्हें आज तक नियुक्त नहीं किया गया है। उच्चशिक्षा निदेशालय के बीच समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित कर स्क्रीनिंग कमेटी गठन और साक्षात्कार के बाद नियुक्ति पत्र जारी होने थे। प्रथत सूची के कार्मिकों को विवि में लेने के बाद द्वितीय सूची अभी तक लटकी है। बताया जा रहा है कि इस बीच अपर सचिव द्वारा जारी पत्र में पिथौरागढ़ व बागेश्वर महाविद्यालयों में कार्यरत ऐसे कार्मिकों जो विवि व निदेशालय द्वारा आयोजित स्क्रीनिंग कम साक्षात्कार में सम्मिलित हुए थे व विवि में समायोजन के इच्छुक हैं, कुलसचिव को सूची उपलब्ध करवाने के आदेश दिये हैं। ऐसे में सबकी निगाह आने वाले दिनों पर है कि अब क्या होगा।

क्वीरी में माँ नन्दा की स्थापना

मुनस्यारी। क्वीरी ग्राम में माँ नन्दा की मूर्ति की स्थापना से क्षेत्रवासियों में उत्साह है और उन्होंने क्वीरीजिमिया तक सड़क कार्य को शीघ्र पूरा करने की मांग की है।

बताते चलें कि इस बार संकल्प अनुसार बहादुर सिंह क्वीरियाल ने मूर्ति स्थापना के साथ ही ग्राम में भण्डार कक्ष बनवाया, जिसकी सभी द्वारा सराहना की जा रही है। पं. हरीश जोशी द्वारा पूजा-अर्चना के दौरान धापा व अन्य स्थानों से भी बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। यहाँ जीमिया तक तो सड़क बन चुकी है जिसे क्वीरी तक बनना है।

ग्राम में मूर्ति स्थापना के भव्य आयोजन के लिये भगवती क्वीरियाल, पुष्कर सिंह क्वीरियाल, वीरेन्द्र क्वीरियाल लगातार तैयारी में जुटे रहे। ग्राम प्रधान सहित तमाम लोगों की उपस्थिति इसमें रही। भण्डारे तक आयोजन में केदार सिंह क्वीरियाल, भगत पछाई, एनडीए टॉपर शिवराज, गंगा देवी, जमुना देवी, खिला देवी, दिनेश सिंह, महिमन सिंह, देवेन्द्र सिंह धपवाल, प्रेम सिंह, नन्दन सिंह लस्पाल सहित कई लोग पधारे।

गंगोलीहाट में बकरी पालन प्रशिक्षण

गंगोलीहाट। जलागम परियोजना के तहत विकासखण्ड के ग्राम पंचायत दौला उप्रेती में बकरी पालन का प्रशिक्षण दिया गया। बकरी पालन के लिए नई तकनीकी सिखाई गई। इस अवसर पर बेरीनाग की पशु चिकित्सा अधिकारी डाक्टर प्रणनय अग्रवाल ने पशुपालन विभाग द्वारा बकरी पालन के प्रोत्साहन के लिए चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी भी दी। प्राथमिक विद्यालय दौला उप्रेती में परियोजना की द्वितीय यूनिट द्वारा आयोजित बकरी पालन के तीन दिवसीय प्रशिक्षण का उद्घाटन ग्राम प्रधान श्रीमती रंजना देवी तथा क्षेत्र पंचायत सदस्य अरविंद कुमार द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। यूनिट अधिकारी ललित हर्बोला ने जलागम द्वारा आजीविका के क्षेत्र में बकरी पालन, मुर्गी पालन तथा लोहार गिरी से पैदा होने वाले रोजगारों के सन्दर्भ में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों का जीवन स्तर ऊपर उठाना पहली प्राथमिकता है।

प्रशिक्षण में सोसायटी फार एक्सन इन हिमालया पिथौरागढ़ के प्रशिक्षक कुन्दन सिंह बोरा तथा दीपक बोरा द्वारा बकरी पालन के इतिहास पर प्रकाश डाला गया। बताया कि हम बकरी पालन किस उद्देश्य से कर रहे हैं पहले बकरी पालक को इस बात को तय करना होता है। कहा मांस, ऊल तथा दूध के लिए बकरी पालन किया जाता है। इन तीन लक्ष्यों में से एक लक्ष्य तय करते हुए बकरी पालन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया जा सकता है। बेरीनाग से पहुँची पशु चिकित्सा अधिकारी डा.अग्रवाल ने बकरी पालन के क्षेत्र में वैज्ञानिक आधार पर किए जाने वाले प्रयासों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बकरी का भोजन तथा उसे होने वाली बीमारियों के बारे में सामान्य जानकारी हर बकरी पालन को होनी चाहिए।

उन्होंने बताया कि उत्तराखण्ड सरकार द्वारा बकरी पालन को प्रोत्साहन देने के लिए पांच बकरियों को खरीदने के लिए विभाग द्वारा ऋण दिया जा रहा है। उसके बाद विभाग 10 बकरियां देकर इस व्यवसाय को प्रोत्साहन दे रही है। इस योजना का लाभ लिया जा सकता है। इससे हम एक अच्छी आय अर्जित कर सकते है। विषय विशेषज्ञ पुष्पा पांडे ने जलागम परियोजना द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी देते हुए बताया कि हमारा उद्देश्य गांव के लोगों की आजीविका को बढ़ाना है।

हाथीडगर में नया पर्यटन जोन खुलेगा

रामनगर। तराई पश्चिमी वन विभाग में फाटो जोने के साथ ही 32 किलोमीटर का एक नया जोन खुलने जा रहा है। आमपोखरा रेंज के नया पर्यटन जोन हाथीडगर बनाया गया है। हालांकि इस कार्य में अभी समय लगना है।

तराई पश्चिमी वन प्रभाग के आम पोखरा रेंज के हाथीडगर में जो नया पर्यटन जोन बन रहा है, इसमें पर्यटक सुबह व सायं की पाली में सफारी कर सकेंगे। कार्बेट पार्क में पर्यटकों का दबाव को कम करने के लिये वन विभाग यह नया पर्यटन जोन विकसित कर रहा है।

कार्बेट पार्क के ढिकाला, बिजरानी, दुगदिवी, झिरना, ढेला, गिरिजा व पाखरो सफारी जोन हैं। कार्बेट से बाहर रामनगर वन प्रभाग का सीतावनी एवं तराई पश्चिमी वन प्रभाग का फाटो पर्यटन जोन भी है। तराई पश्चिमी वन प्रभाग के डीएफओ प्रकाश चन्द्र आर्या ने बताया कि तराई पश्चिमी वन प्रभाग के फाटो पर्यटक जोन में भी नया गेट खोला जा रहा है। इस जोन का दायरा 32 किमी है। इसमें 50 जिप्सियां सफारी के लिये भेजेंगे।

परिक्रमा

भारत-नेपाल सेना संयुक्त युद्धाभ्यास

पिथौरागढ़। भारत और नेपाल की सेना के जवानों का संयुक्त युद्धाभ्यास हुआ। 'सूर्य किरण' नाम से इस अभ्यास के द्वारा दोनों देशों के द्विपक्षीय सम्बन्ध मजबूत होंगे। इसमें युद्ध कौशल, पहाड़ी क्षेत्र में आतंकबाद से निपटने और आपदा नियन्त्रण की तकनीक का आदान-प्रदान किया गया। युद्धाभ्यास के लिये नेपाल से 23 अधिकारी, 24 जेसीओ और 286 जवान पिथौरागढ़ पहुँचे।

शान्तिपुरी में अतिक्रमण हटाए

पन्तनगर। शान्तिपुरी नम्बर एक से चार तक अतिक्रमण की जद में आ रहे सौ से अधिक मकानों की दीवार और लिंटर प्रशासन ने हटवा दिए। पुलिस बल के साथ बुल्डोजर से लैस टीम ने ताबड़तोड़ ध्वस्तीकरण की कार्रवाई की। इसी प्रकार किच्छा में भी जिला विकास प्राधिकरण ने नगर और ग्रामीण क्षेत्र में कई अवैध कालोनियों का ध्वस्तीकरण किया है। यह अभियान अभी जारी रहेगा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जौलजीवी मेले के बहाने : मेलों का लोकरंग जरूरी है न कि राजनीति रंग

पिघलता हिमालय प्रतिनिधि

उत्तराखण्ड के प्रमुख मेलों में है- 'जौलजीबी मेला'। राजा-रजवाड़ों के दौर में जिस भाईचारा और व्यवस्थाओं को देखते हुए व्यापारिक मेलों की नींव रखी गई थी, उसमें धार्मिक आस्था भी जुड़ी थी। इन मेलों के स्वरूप को देखते हुए बहुत दूर-दराज से लोग इसमें आते थे और वर्तमान तक भी लोगों की आस्था बनी हुई है। ऐसे में इनका लोकरंग जीवन्त रहता है परन्तु वर्तमान दौन में जिस प्रकार से राजनीतिक जुगत को लगाया जा रहा है वह न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता।

अभी जौलजीवी मेले की ही बात कर लेते हैं। सरकारी तारीखों के हिसाब से तो मेला सम्पन्न हो गया है लेकिन लोक में रमा यह मेला अभी जारी है। हालांकि इस मेले में अब पुरानी सी रौनक नहीं रही। भारत, नेपाल के अलावा तिब्बत से तक यहाँ व्यापारी आते थे। अस्कोट के पाल वंश द्वारा इसका संरक्षण था। भारत-चीन युद्ध के बाद तिब्बत व्यापारियों का आना बन्द हो गया लेकिन भारत-नेपाल के की सांझा विरासत बनी हुई है। लेकिन धीरे-धीरे मेलों में जिस प्रकार से राजनीति का ग्रहण लगते जा रहा है और संस्कृति के नाम पर दूषित वातावरण को ओढ़ा जाने लगा है वह इन परम्परागत मेलों के लिये खतरा ही हैं। जौलजीवी मेले में अब बाहर से आने वाले व्यापारियों की संख्या घट चुकी है और जिस प्रकार की विशुद्ध चीजें यहाँ मिलती थी, वह भी बहुत कम हो चुकी हैं। बरेली, आगरा, हाथरस, लुधियाना से इस बार भी कई दुकानदार पहुँचे हैं जो पिछले कई वर्षों से आते रहे हैं। ये व्यापारी पुराने दिनों को याद करते हुए कहते हैं कि अब व्यापार घट चुका है और लड़ने-भिड़ने वाले परेशान करते हैं। वर्तन, कपड़े, जड़ीबूटी, कृषि यन्त्र, खेल-खिलौने से जुड़े स्टाल भी मेले में लगे हैं। कई बार बिगड़ैलों द्वारा इन्हें परेशान किया जा रहा है लेकिन व्यापार संघ अध्यक्ष धीरु धर्मशक्तू व साथियों द्वारा इन्हें सुरक्षा दी जा रही है। आश्चर्य है कि इतने बड़े मेले में पुलिस व्यवस्था बहुत कम है। वर्तमान में मेलों को विसरते हुए महोत्सव नाम से जगह जगह आयोजन होने लगे हैं परन्तु सदियों से चले आ रहे पौराणिक, व्यापारिक, धार्मिक मेलों के प्रति समाज की आस्था है। इन मेलों में भी महोत्सव नाम का तड़का लगाते हुए इसके सांस्कृतिक स्वरूप को गिरोहबन्दी की सामग्री बना दिया जाना अपसंस्कृति को जन्म दे चुका है। आने वाली पीढ़ियों के दिमाग में वही सब पैठ कर रहा है जो वह मंच पर देख रहे हैं। भीड़ जुटाने के लिये चटकीले मंच को सहारा बनाना कितना ठोस कार्य है.....। क्या यह लोक संस्कृति का संरक्षण है या बाजारु हलचल?

इस बार जौलजीवी मेले का उद्घाटन मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा किया गया लेकिन स्थानीय विधायक हरीश सिंह धामी का करीब न होना आश्चर्य की बात थी। हालांकि पुष्कर धामी और हरीश धामी के सम्बन्ध बहुत मृदु हैं लेकिन मेला कमेटी द्वारा कैसे चूक हुई होगी कि उन्होंने स्थानीय विधायक से स्थानीय मेले की अध्यक्षता को नहीं कहा। इस मामले में विधायक हरीश सिंह धामी ने पिघलता हिमालय से कहा कि जौलजीवी मेला हमारी पुरानी विरासत है, इसे संवारने के लिये पीढ़ियां लग गई हैं। इसके स्वरूप और अनुशासन को बनाए रखना जरूरी है। इसमें किसी भी तरह की राजनीति को स्थान नहीं दिया जा सकता है। विधायक धामी अपनी ओर से मेले में पहुँचे और व्यापारियों सहित सभी से भेंटघाट की। बाद में उन्होंने मेले को आगे के लिये विस्तारित करते हुए सहयोग किया।

जौलजीवी मेले में तीन संचालकों द्वारा लगातार मंच को बांधे रखा गया। रं, शौका, नेपाली, अंग्वाल, गोरखा संस्कृति दर्शाने के लिये मंचीय प्रस्तुतियों के अलावा स्थानीय विद्यालयों की प्रस्तुतियों को सराहा गया। इसके अलावा आजकल प्रचलित लोक गायकों को आमंत्रित किया गया था। मेला कमेटी द्वारा निबन्ध-भाषण-सांस्कृति प्रस्तुतियों की प्रतियोगिता का अंजाम दिया गया। कहा कि व्यापारिक मेले के साथ इसे अकादमिक स्वरूप भी दिया जाना चाहिये। नई पीढ़ी को इन मेलों के बारे में पता चले, इसके इतिहास और अपनी संस्कृति से परिचय हो।

चलो, जैसा भी है मेला तो मेला ही हुआ। इस बार भी जौलजीवी मेला हो रहा है लेकिन इस मेले और इसके जैसे अन्य मेलों में उनके लोकसंग को बचाए रखना जरूरी है। इसके लिये जरूरी है कि स्थानीय उत्पादों की प्रदर्शनी लगे और लोक कलाकारों द्वारा देवों का आह्वान हो। यह तर्क देना या यह समझाना कि भीड़ जुटाने के लिये चटकदार मंच जरूरी है तो यह न्यायसंगत नहीं होगा। यदि भीड़ चटकदार में ही जुटना पसन्द करती है तो वह खोखलापन ही होगा। इस सच को समय रहते जानना जरूरी है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

बिछड़ा कुछ इस अदा से कि रुत ही बदल गई
इक शख्स सारे शहर को वीरान कर गया।
-ख़ालिद शरीफ़

३१ दिसम्बर २०११ वाराणसी में.....

धुन पहाड़ की। प्रकृति के बीच.....

तीस वर्ष पहले मुम्बई में.....

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग मैटेरियल, भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी
(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)
गोदाम- जोहार एसोसिएट्स
बच्चीनगर- 1, कमलुवागांजा, हल्द्वानी
मो.- 7409440813, 7500619761

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादक: श्रीमती गीता उप्रेती फोन/फैक्स: (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते- जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)